2566वें बुद्ध जयन्ती समारोह के अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान का सम्बोधन

(दिनांक 16.05.2022, समय–पूर्वाह्न 10:00 बजे, स्थान–महाबोधि मंदिर परिसर बोधगया)

2566वें बुद्ध जयन्ती के अवसर पर आज इस अतिपावन भूमि सम्बोधि स्थान पर आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम मैं महामानव भगवान बुद्ध के चरणों में अपना प्रणाम निवेदित करता हूँ तथा आप सबको उनकी त्रिविध पावन पूर्णिमा की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

सबको विदित है कि वैशाख पूर्णिमा के दिन ही सिद्धार्थ गौतम का जन्म हुआ था, इसी दिन उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी और इसी दिन उनका महापरिनिर्वाण हुआ था। बौद्ध जगत के लिए यह सबसे पवित्र दिवस है।

हम जिस पवित्र बोधिवृक्ष की छाया में बैठे हैं, यह समस्त बौद्ध जगत का पवित्रतम स्थल है, क्योंकि यह स्थान राजकुमार से तपस्वी बने सिद्धार्थ के बुद्ध बन जाने का साक्षी है। यह बौद्ध धर्म के समस्त मूल सिद्धांतों के प्रस्फुटन की भूमि है। हमारे देश भारत और विशेषकर बिहार राज्य को विशेष गौरव प्राप्त है कि यह स्थान एक प्रमुख विश्व–धर्म का केन्द्र है तथा अनेक देशों के श्रद्धालु यहाँ आकर अपने को सौभाग्यशाली मानते हैं और श्रद्धापूर्वक शीश नवाते हैं।

भगवान बुद्ध ने यहीं दुःख, दुःख का कारण, दुःख से मुक्ति एवं मुक्ति के मार्ग नामक चार आर्य सत्य का प्रतिपादन किया था। तृष्णाएँ दुःख की जननी हैं तथा अष्टांगिक मार्ग के पालन से इनका निरोध संभव है। संक्षेप में, प्रज्ञा, शील व समाधि के अनुपालन से मनुष्य सुखी एवं शांतिमय जीवन व्यतीत कर सकता है तथा समस्त लोगों के लिए करूणा एवं मैत्री भावना का विकास कर उनके कल्याण की कामना को मूर्त्त रूप दे सकता है।

बौद्ध धर्म तार्किक, व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक आधार वाला धर्म है। इसमें ईश्वर का भय नहीं है। कुशल कर्म का अच्छा और अकुशल कर्म का बुरा परिणाम होता है। कोई जन्म से ऊँच–नीच नहीं होता। अपने कर्म से ही कोई महान बनता है, चाहे वह नीची या ऊँची जाति में जन्म ले। बौद्ध धर्म का सामाजिक पक्ष बहुत ही महत्वपूर्ण है। मानव–मानव का सुसंबंध समतापूर्ण व्यवहार में लक्षित होता है। यहाँ भेद–भाव का स्थान नहीं है। भगवान बुद्ध के संघ में भंगी–नाई को भी उच्च स्थान प्राप्त हुआ है। पुरूषों के समान स्त्रियों का भी संघ में प्रवेश से धर्म का द्वार सभी के लिए खोलने का उदाहरण बुद्ध धर्म में है।

आज वैश्वीकरण, निजीकरण एवं उदारीकरण के दौर में विश्व समाज को भगवान बुद्ध के ''बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'' के सिद्धांत को अपनाने की आवश्यकता है। प्रेम, करूणा व भाईचारा से घृणा, उत्पीड़न एवं विषमता को परास्त किया जा सकता है। भगवान बुद्ध का उद्देश्य एक ऐसी मानवतावादी दुनिया की पुनर्रचना करना था जहाँ करूणा, प्रेम, समानता, अहिंसा एवं स्वतंत्रता व्यक्ति के जीवन को अर्थपूर्ण बना दे तथा समरसता का भाव स्वतः संचारित हो।

बौद्ध धर्म मुख्य रूप से एक उत्तम आचार संहिता है। बौद्ध नीतिशास्त्र में मैत्री, करूणा, मुदिता और उपेक्षा को ब्रह्म विहार कहा जाता है। दूसरों के प्रति नकारात्मक सोच एवं कर्म का त्याग करना चाहिए। मानव जीवन को सदाचारी बनाने के लिए पंचशील का पालन विशेष महत्वपूर्ण है। जीव हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ एवं नशा–सेवन से दूर रहने मात्र से मनुष्य का जीवन सुखमय एवं शांतिमय बन सकता है। ध्यान साधना का स्थान बौद्ध जीवन में महत्वपूर्ण है। मानसिक एवं शारीरिक स्थिति को संतुलित बनाए रखने हेतु ध्यान का अभ्यास आवश्यक है। भगवान बुद्ध द्वारा दिए गए उपदेश सार्वकालिक, व्यावहारिक एवं सर्वहितकारी हैं।

भारत का महानतम ऐतिहासिक व्यक्तित्व बुद्ध भगवान के रूप में विश्व में पूजित हैं, यह हमारे लिए अत्यन्त गौरव की बात है। उनके कारण बोधगया अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का स्थल है। इसका विकास द्रुतगति से हो रहा है। यह स्थल तीर्थ यात्रियों एवं पर्यटकों के विशेष आकर्षण का केन्द्र है। इस स्थान का विकास भगवान बुद्ध की प्रतिष्ठा के अनुरूप होना चाहिए। इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि नए विकास से आध्यात्मिकता का वातावरण बाधित नहीं हो तथा वैश्विक स्तर पर बोधगया की विशेष पहचान हो, जो आधुनिकता को भी आध्यात्मिकता के सांचे में अपनाए।

मैं पुनः आप सब को आज के अतिपावन दिवस वैशाख पूर्णिमा के अवसर पर बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ तथा भगवान बुद्ध के प्रति भावपूर्ण श्रद्धा अर्पित करते हुए उनसे प्रार्थना करता हूँ कि आप सबका जीवन सुखी हो। आप भगवान बुद्ध के बताए मार्ग का अनुसरण करने का प्रयास करें। अहिंसा, प्रेम, करूणा, दया एवं भ्रातृत्व का संसार निर्मित हो तथा आप में विश्व का नेतृत्व करने की क्षमता आए। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद।

नमो बुद्धाय।

जय हिन्द!

***